IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 9, September 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

(A Monthly Peer Reviwed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 9, September 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1109102|

स्त्री–विमर्श का पाश्चात्य स्वरूप

डॉ. भवानी शंकर नोगिया

सहायक आचार्य, हिंदी (विद्या संबंल)

राजकीय महाविद्यालय, मनोहर थाना (झालावाड़)

स्त्री–विमर्श पितृसत्तात्मक समाज के विरूद्ध आंदोलन के रूप में शुरू हुआ। मुख्य मुद्दा था, स्त्री को वे सभी अधिकार प्राप्त करवाना जो पुरुषों को प्राप्त थे, लेकिन सभी को उनसे वंचित कर दिया गया था। पश्चिम में तो स्त्री–विमर्श लेखन बींसवी शताब्दी में फ्रेंच लेखिका सिमोन द बोउवार ने "दी सैकेण्ड सेक्स" जैसी चर्चित रचना द्वारा कर दिया था जिसका प्रभा खेतान ने हिंदी में अनुवाद "स्त्री–उपेक्षिता" करके इस विमर्श से हिंदी पाठकों को परिचित कराया।

स्त्री–विमर्श पाश्चात्य संस्कृति की देन कहा जाता है। समाज में यदि लड़की स्वतंन्त्र रहती है तो उसे पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण कहा जाता है। यह वास्तविकता भी है कि स्त्री को समाज में वास्तविक स्थान मिलना चाहिए।

"पाश्चात्य संस्कृति ने हमें युद्ध की चुनौती न देकर मित्रता का हाथ बढ़ाया, इसी से हमारा उससे कोई बाहय संघर्ष भी नहीं हुआ। वह हमारी अनेक सामाजिक संस्थाओं में प्रवेश पाते–पाते हमारे हृदय में प्रविष्ट हो गई और इस प्रकार बिना किसी संघर्ष के भी हमारे जीवन को उतना ही प्रभावित कर सकी जितनी स्वयं हमारी संस्कृति कर सकती थी। उसकी उपयोगिता या अनुपयोगिता के संबंध में बहुत कुछ कहा जाता रहा है और कहा जाता रहेगा परन्तु इतना दोनों ही दशाओं में सत्य है कि उसने हमारे सामाजिक दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है। शासक संस्कृति होने के कारण यह अन्य संस्कृतियों के समान हमारी संस्कृतिक में विलीन होना नही चाहती, अन्यथा इससे हमारे विकास में कोई विशेष बांधा न पहुँचती। वर्तमान परिस्थितियों में उसने हमारे शिथिल समाज के भीतर एक ऐसे समाज का निर्माण कर दिया है जिसकी आत्मा भारतीय और शरीर अभारतीय जान पड़ता है। इसे न हम साथ ले चल सकते हैं और न छोड़ सकते हैं। वह पश्चिमी विचारधारा में बहकर भी उससे शाक्षित नहीं होता और भारतीयता में जीवित रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होता।" 1

प्लेटों से लेकर जॉन स्टुअर्ट मिल तक स्त्री–विमर्श ने दुरुह रास्ता तय किया। स्त्री–पुरुष, देह–दिमाग, प्रकृति–संस्कृति, इतिहास और दर्शन इन सभी में दोयम मानसिकता रही। दार्शनिकों ने स्त्री के प्रति अन्याय नहीं किया परन्तु स्त्री को 'मोह', 'माया', 'भाव', 'अभाव', 'अबौद्धिकता' और 'अशक्ता' जैसी उपमाएँ दे डाली। जेंडर रूढ़ी को बढ़ावा दिया गया।

प्लेटों ने लिखा है "जिसे Great Chain of being" कहा जाता है, उसके पदानुक्रम को स्वाभाविक और वैध माना है। दार्शनिक विमर्श और बौद्धिक चिंतन मानव सुलभ कार्यों में सर्वोत्तम हैं, किन्तु गुलामों, बहशियों और स्त्रियों को इनसे दूर ही रखा जाना चाहिए, गुलामों और बहशियों को उनकी कमजोर सामाजिक स्थिति के कारण और स्त्रियों को उनकी स्वभावगत कमजोरियों के चलते।" 2

स्त्रियों को अलग क्यों रखा जाये, स्त्री अब पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं। प्लेटों महान दार्शनिक है किन्तु स्त्री की स्वभावगत कमजोरियों के कारण गिनाने से नहीं चुकते। जो तत्कालीन जेंडर–रूढ़ी को व्यक्त करते हैं।

पाश्चात्य संस्कृति ने समाज की नींव को खोखला कर रखा है। पाश्चात्य संस्कृति मनुष्य के स्वच्छन्द सहयोग पर स्थिर है। निरंकुश समाज मनुष्यता को समाप्त कर देता है। पाश्चात्य संस्कृति स्वच्छंदता को महत्व देती है। "स्त्रियाँ प्रायः सोचती है कि एक स्त्री के लिए इतना ही बहुत है। वे और आगे जाने की कोशिश नहीं करती अपने क्षेत्र में बेमिसाल होने की कोशिश वे एक अपराध–बोध महसूस करती हैं। कैरियर कभी भी एक ठोस अस्तित्व वाली चीज नहीं होता। हमेशा वह दुविधा में होती है– क्या मैं एक कैरियर अपनाऊँ? या घर मे रहकर परिवार की देखभाल करूँ? उन्हें कोई कैरियर अपनाना ही होता है, उसके लिए तैयारी करनी होती है, अपने आपको पूरी लगन और मेहनत से उसमें लगाना होता है। स्त्रियाँ अपने आप में ही अलग–अलग मान्यताओं में बाँटी हुई हैं। फिर समाज भी उन्हें निरूत्साहित करना चाहता है। अगत वे स्वतन्त्रता और एक कैरियर का चुनाव करती हैं तो उन्हें 'एडवेंचररस' या ऐसा ही कोई नाम दे दिया जाता है।" 3

प्लेटों ने स्त्री को दर्शनादि कार्यो के योग्य नहीं माना। स्त्री को पुनर्जन्म में पुरुष होने पर योग्य माना। ऐसी धारणा स्त्री के प्रति न्याय करती है? उन्होंने यहाँ तक लिखा है कि "जो पुरुष ढंग से अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करते, उन्हें अगले जन्म में स्त्री का शरीर (दंडस्वरूप) मिलता है।" 4 प्लेटों ने अपनी अकादमिया में एक्जिथिया (फिलेसियाकी) और लास्थीनिया (मानिटियाकी) जैसी इक्का–दुक्का स्त्रियों को स्थान दिया। उन्होंने स्त्री को घरेलू काम और बच्चा पैदा करने तक ही सीमित माना।

अरस्तु का दृष्टिकोण सोद्देश्यवादी था। पत्नी और बच्चों पर शासन को उचित माना। घर के कामकाज और बच्चे जनने के कारण स्त्रियों में उच्चतर वृत्तियों के लिए उचित नहीं माना। उन्होंने स्त्री के लिए यहाँ तक लिखा है कि –" वे गुलामों, कारीगरों और छोटे व्यापारियों की तरह 'highest happiness of the few' के लिए प्रस्तुत रहें, राहों में बिछी हुई सी" 5

उन्होंने स्त्री को नमनीयता, आज्ञाकारिता, सहिष्णुता और सेवा–भावना की पर्याय माना। ज्ञान और शक्ति का अंतिम स्त्रोत पुरुष को ही माना। अरस्तु और डेकार्टस के बीच के वर्षों में ऑगस्टाइन फिलो

(A Monthly Peer Reviwed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 9, September 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1109102|

अक्तिकस का चिंतन स्त्री–विरोधी था। स्त्रियों को बच्चा–जज्जा, भौतिक, दैहिक बंधनों से मुक्त होना असंभव माना। स्त्रियों को सिर्फ भोग्य वस्तु माना गया। स्त्रियों के प्रति पितृसत्तात्मक सोच को और अधिक मजबूत बना दिया। दोयम मानसिकता को इससे बढ़ावा मिला। स्त्री को सिर्फ पुरुष अनुचरी मात्र माना गया। कहा जा सकता है कि ऑगस्टाइन ने भी स्त्री के साथ न्याय नहीं किया। स्त्री को काम की मूर्मि माना। उसे पितृसत्ता से उबरने ही नहीं दिया गया। उसे पितृसत्ता की बेडियों से सदियों के लिए बांध दिया गया।

कान्ट लिखते है कि जब स्त्री को कूपमंडूक बना के रखा जाएगा तो उसका विकास कैसे संभव हैं? उसका मानसिक, शारीरिक विकास तभी संभव है जब उसे कूपमंडूकता से निकालकर बाहर का आकाश भी देखने की स्वतंत्रता हो। अट्ठारहवीं शती की जर्मनी में जो भी प्रथाए, उपस्थापनाएं प्रचलित थी, कान्ट ने उनको आदर्श माना। उन्होंने स्त्री को "Querrulous, Jealous and Demanding" माना। उन्होंने लिखा है कि –"स्त्रियों की उपस्थिति द्रावक होती है और उनके शौक श्रृंगार भी उत्तम होते हैं। पति–पत्नी को एक 'Single Moral Person' माना जाए तो 'It would be called animated and governed by the undrstanding of the man and the taste of the wife' कुल मिलाकर स्त्री का पुरुष से वही रिश्ता बना जो सुरुचि का समझदारी से यानी वह उसका अंश मात्र रही।" 6

हीगेल ने स्त्री को घर–गृहस्थी एवं भावनात्मक सुरक्षा की चिन्ताओं से युक्त माना। इन्होंने लिखा है कि स्त्री को तो नागरिक माना ही नहीं जाना चाहिए। स्त्री को पुरुषों के सामाजिक उद्देश्य साधने की प्रेरणा और सुविधा के रूप में देखा। परन्तु हीगेल ने पति के चुनाव में स्त्रियों की भागीदारी एवं विवाह विच्छेद और संपति के अधिकार में स्त्रियों का समर्थन किया।

मार्क्स ने वर्ग–संघर्ष के विकास में स्त्री को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने स्त्री को शोषित वर्ग प्रतिनिधि के रुप में ही देखा। सामाजिक उद्देश्यों पूर्ति के लिए स्त्रियों को अक्षम नहीं माना यहाँ तक की परिवार भी उनकी दृष्टि में "Fixed Immutable of natural" नहीं है। प्रजनन को उत्पादन से जोड़कर नहीं देखा।

जॉन स्टुअर्ट मिल ही वे पहले दार्शनिक थे, जिन्होंने रोजगार, शिक्षा और मताधिकार के प्रश्न पर स्त्रियों का समर्थन किया। स्त्रियों को पुरुष के बराबर सम्मान, अधिकार दिलाने की बात की। उन पर महिला मित्र हैरियट टेलर के विचारों का ही प्रभाव था।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 9, September 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1109102|

संदर्भ सूची

1. महादेवी वर्मा : श्रृंखला की कड़ियाँ, पृष्ठ 122
2. अनामिका : स्त्री–विमर्श की उत्तरगाथा पृ. 23
3. सिमोन द बोउवार : वागर्थ (अंक 238) मई 2005, पृ. 123
4. अनामिका : स्त्री–विमर्श की उत्तरगाथा पृ. 24
5. वही–––––––––––– पृ. 26
6. वही –––––––––––––––– पृ. 28
7. मंजु चतुर्वेदी : स्त्री–विमर्श और हिंदी कहानी।
8. चक्रधर नलि : प्रभा–खेतान की रचना धर्मिता, मधुमति (अंक–8), अगस्त 2014
9. प्रभा खेतान : उपनिवेश में स्त्री, मुक्ति–कामना की दस वार्ताएँ–
10. प्रभा खेतान : सीमोन द बोउवार, दी सैकण्ड सेक्स का अनुवाद 'स्त्री–उपेक्षिता'

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

ISSN
INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details